

वन्यजीवों से फसलों को बचाने के लिये अब होगी बाँयो-फेंसिंग

चर्चा में क्यों

16 मई, 2023 को उत्तराखण्ड वन विभाग के मुख्य वन्यजीव प्रतपालक डॉ. समीर सनिहा ने बताया कि राज्य में वन्यजीवों द्वारा होने वाले फसलों के नुकसान को कम करने के लिये सौर ऊर्जा बाड़ की जगह अब बाँयो-फेंसिंग को बढ़ावा दिया जाएगा।

प्रमुख बिंदु

- बाँयो-फेंसिंग को बढ़ावा देने के लिये राज्य सरकार की ओर से इसके लिये सेल गठित करने के साथ ही विशेष अधिकारी नियुक्त किये जाने के निर्देश दिये गए हैं। यह सेल बाँयो-फेंसिंग को बढ़ावा देने के साथ ही इन वर्षों पर शोध भी करेगी।
- कैपा फंड में ही इसके लिये बजट की व्यवस्था की जाएगी। अलग-अलग फेंसिंग के लिये पौधों की प्रजातिका अध्ययन कराया जाएगा।
- ज्ञातव्य है कि अब तक फसलों को नुकसान से बचाने के लिये सौर ऊर्जा बाड़ ही लगाई जाती थी, लेकिन इसे लगाने में खर्च अधिक आता है। विभाग की ओर से एक बार बाड़ लगाने के बाद इसे ग्रामीणों को सौंप दिया जाता है। ठीक से रखरखाव नहीं होने के कारण यह बाड़ जल्दी ही खराब हो जाती है और लाभार्थियों को अपेक्षित परिणाम नहीं मिल पाते हैं।
- इस समस्या से बचने के लिये बीते दिनों मुख्य सचिव डॉ. सुखबीर सिंह संधु ने कैपा (वनारोपण नधि प्रबंधन व योजना प्राधिकरण) संचालन समिति की बैठक में वनाधिकारियों को बाँयो-फेंसिंग बाड़ को बढ़ावा देने के निर्देश दिये थे।
- प्रदेश में खासतौर पर जंगली सूअर, हाथी और बंदर फसलों को नुकसान पहुँचाते हैं। जसि क्षेत्र में जसि वन्यजीव का आतंक अधिक है, उस क्षेत्र में उसी के अनुरूप बाँयो-फेंसिंग की जाएगी।
- मौसम, जलवायु और भौगोलिक स्थितियों को देखते हुए अलग-अलग जगह पर अलग-अलग बाँयो-फेंसिंग की जाती है। इसमें आमतौर पर काला बाँस, कांटा बाँस, राम बाँस, जेरनियम, लेमनग्रास, विभिन्न प्रकार के कैकटस, यूफोरबिया एंटीकोरम (त्रधारा), डेविल्स बैकबोन, पूर्वी लाल, क्लेरोडेंड्रम इनर्सिस, बोगनविलिया, करौंदा, जेट्रोफा करकस, डुरंटा इरेकटा, हाईब्रिड विलिटरी, लीलैंड स्रू और हेमेलिया आदि शामिल हैं।
- देहरादून वन प्रभाग के वनाधिकारी नीतीशमण त्रिपाठी ने बताया कि बाँयो-फेंसिंग का प्रयोग वर्ष 2015 में लैंसडाउन में किया गया था, जो सफल रहा। कुछ समय पहले रामनगर में भी यह तरीका अपनाया गया। इस प्रकार की फेंसिंग अनेक देशों में प्रयोग की जा रही है।
- इसके तहत मधुमक्खी पालन का बाँयो-फेंसिंग के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसमें मधुमक्खी के डबिबों को खेत के किनारे ज़मीन पर रखने के बजाय पेड़ों या खूंटों की मदद से ज़मीन से ऊपर एक तार की सहायता से लटका दिया जाता है। जैसे ही कोई जानवर इस तार को हलाता है, मधुमक्खियाँ बाहर आकर उस पर हमला कर देती हैं। हाथियों को खेतों से दूर रखने में यह तरीका कारगर साबित हुआ है।
- इसलिये बेहतर होती है बाँयो-फेंसिंग:
 - सौर ऊर्जा बाड़ से सस्ती पड़ती है तथा लगाने के बाद रखरखाव का बहुत ज्यादा इंझट नहीं।
 - विभिन्न प्रकार की बाड़ से विभिन्न प्रकार के उत्पादन भी मिलते हैं।
 - भूमिका कटाव रोकती है।
 - यह दीवार बनाने या गड्ढे खोदने से ज्यादा सस्ता सौदा है।